ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-8* November-2021
Anthology : The Research

कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता : एक समीक्षात्मक अध्ययन
Krishnamurti's Educational Thought and Its Relevance in the Present: A Critical Study

Paper Submission: 10/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

आईलीन डिसिल्वा
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग
करियर पॉइंट यूनिवर्सिटी
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता एक समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत उनके शैक्षिक विचारों का गहन अध्ययन, वर्तमान में उनकी शिक्षाओं की उपादेयता, तथा मानव जीवन की समस्त समस्याओं का व्यापक अवलोकन किया है और वर्तमान की समस्त समस्याओं पर विचार विमर्श किया है। शोधकर्ता स्वयं शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न कार्यरत होने के कारण जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाएं पढ़ने और समझने के पश्चात यह अनुभव किया कि जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षक के ऊपर यह मुख्यतः जिम्मेदारी सौंपी है कि वह विद्यार्थियों में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास कर। इस प्रकार शोधकर्ता ने जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में दार्शनिक, शैक्षिक, धार्मिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक विचारों का अध्ययन किया है।

The aim of this study was under a critical study of Krishnamurti's educational thought and its relevance in the present, an in-depth study of his educational ideas, the utility of his teachings in the present, and all the problems of human life have been comprehensively observed and discussed all the problems of the present. Due to his involvement in the field of research, J.J. Realized this after reading and understanding Krishnamurti's teachings so that J. Krishnamurti has entrusted the main responsibility on the teacher to try to bring revolutionary changes not only in the students but in the whole world. Thus the researcher J. Philosophical, educational, religious, moral, psychological and social ideas have been studied in Krishnamurti's teachings.

मुख्य शब्द- मनु, जे. कृष्णमूर्ति, प्रासंगिकता, दर्शन, मृत्यु, आध्यात्मिकता
Keywords: Manu, J. Krishnamurti, Relevance, Philosophy, Death, Spirituality

प्रस्तावना

प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों ने 'सा विद्या याविमुक्तये' कहकर शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया था। इसका महत्व इतना अधिक था कि इसे मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया-

"ज्ञान मनुष्यस्यस्य तृतीय नेत्रः"

शिक्षा मनुष्य को इतना सार्थक बनाती है कि वह अपने जीवन में आये अंधकार व प्रकाश का विभेदीकरण करने में समर्थ हो सके और उस अंधकार को पहचानकर प्रकाश में परिवर्तित कर सके। भारतीय शिक्षा व्यवस्था कई प्रकार के मतों विचारधाराओं और दर्शनों से प्रभावित हुई है। इनमें पाश्चात्य विद्वानों से लेकर भारतीय विद्वानों तक कई महानुभावों का योगदान रहा है।

प्राचीन काल में गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी, विष्णुगुप्त, अश्वघोष, भास्कर, आर्यभट्ट इत्यादि ने आधुनिक शिक्षा के परिपेक्ष्य में अपनी विचारधाराओं से इस देश को ही नहीं वरनसम्पूर्ण जगत को प्रभावित किया है। स्वामी विवेकानंद,महर्षि अरविंदो घोष, महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, ईश्वरचंद विद्यासागर, राजाराम मोहनराय ऐसे आधुनिक चिन्तक हैं जिनके चिंतन ने सारे विश्व पर अपनी अमिटछाप छोड़ी है।

भारतीय विचारकों चिंतको और शिक्षा शास्त्रियों की इसी श्रृंखला में महान चिंतक और दार्शनिक जे. कृष्णमूर्ति का नाम आदर से लिया जाता है। अपनी विचारधारा एवं चिंतन से सारे जगत में इनकी एक विश्वगुरू की छवि स्थापित हुई है और इन्होंने हमारे देश को गौरान्वित किया है।

सारांश का औचित्य

संबंधित साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि जे. कृष्णमूर्ति के विचारों से संबंधित विषय पर अनुसंधानों की संख्या न्यून है तथा जो अध्ययन हुए है उसमें जे. कृष्णमूर्ति के समग्र दर्शन के अध्ययन के परिपेक्ष्य में उनके चिंतन को परिलक्षित किया गया है। विशिष्ट रूप से उनके साहित्य में निहित शैक्षिक तत्वों का अध्ययन और विश्लेषण नहीं किया गया है। शोधकर्ता द्वारा उनके साहित्य में निहित शैक्षिक तत्वों के अध्ययन की आवश्यकता को ध्यान में रखकर उनकी पूर्ति का प्रसार करने हेतु अध्ययन किया गया है तथा जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिन्तन के औचित्य का आंकलन विशेषज्ञों की राय के आधार पर करना।

जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन में वर्तमान की शैक्षिक समस्याओं के समाधान की क्षमता दृष्टिगोचर होती है। इसलिए शोधकर्ता अपने शोध के माध्यम से महान शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षाविद परम आदरणीय जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों को और जो उनका शिक्षा के क्षेत्र में महान योगदान है, उन

समस्त विचारों को समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक पंहुचाकर उनके विचारों से सम्पूर्ण जगत को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। इसलिए इस विषय पर शोध किया गया।

समस्या कथन-"जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकताः एक समीक्षात्मक अध्ययन।"

शोध के उद्धेश्य जे. कृष्णमूर्ति के उपलब्ध साहित्य में समावेश शैक्षिक तत्वों का अध्ययन, विश्लेषण एवं शैक्षिक चिंतन के औचित्य का आकलन विशेषज्ञों की राय के आधार पर करना एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की प्रविधि एतिहासिक शोध विधि, दार्शनिक विधि एवं पाठ्यपुस्तक विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

जे. कृष्णमूर्ति के दार्शनिक विचार

दर्शन उनके अनुसार दर्शन वह है जो हमें साथ के लिए प्रेम, जीवन के लिए प्रेम तथा प्रज्ञा के लिए प्रेम जागृत करता है। उनका मानना है कि शिक्षण संस्थानों से हमें दर्शन के नाम पर जो कुछ पढ़ाया या सिखाया जाता है वह मात्र विचारों एवं सिद्धांतों की व्याख्या होती है। जिसमें सत्य के वास्तिविक स्वरूप् को देखने की क्षमता प्रायः समाप्त हो जाती है।

सत्य कृष्णमूर्ति के अनुसार सत्य एक पथहीन भूमि है। सत्य तक पहुँचने के लियें कोई राजमार्ग नहीं है। सत्य तो स्वयं के भीतर छुपा है।

दुख और दुख भोंग कष्ट का संबंध शरीर से हैं जबकि दुख मानसिक पीड़ा हैं शारिरिक पीड़ा का अन्त औषधि के सेवन से किया जा सकता है, परन्तु मानसिक पीड़ा को दूर करने के लिए व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थितियों को पूरी तरह से जानना होता है भूत और भविष्य की स्मृति दुख का कारण होती है।

भय कृष्णमूर्ति भय को मानव मन की गम्भीर बीमारी मानते है जो मानव जीवन को गहराई तक प्रभावित करती है। भय का कारण जीवन में होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं और जीवन में आने वाली अनिश्चिताओं से होती है। उनके अनुसार आत्मज्ञान होने पर ही भय से मुक्ति संभव है।

मृत्यु वे कहते है कि मनुष्य मृत्यु से भयभीत है। मृत्यु दो प्रकार की होती है- शरीर की मृत्यु और मन की मृत्यु। शारीरिक मृत्यु एक अनिवार्य घटना है। मन की मृत्यु ही वास्तिविक मृत्यु है।

युद्ध और हिंसा युद्ध और हिंसा में कार्य कारण का संबंध बनता है। सभ्यता के इस विकास में हिंसा मनुष्य के लिये विनाशकारी बनती जा रही है। हिंसा के कारण ही मानव विभाजित होकर अपने अस्तित्व को सार्थक नहीं कर पाते। वास्तिविकता में अहिंसक व्यक्ति वही है जो अपने मन की सभी विभाजनात्मक प्रवृत्तियों को सही प्रकार से जानकर आत्मज्ञानी हो गया है।

प्रेम वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रेम व्यक्ति की वासनाओं आंकाक्षाओ से ग्रसित हो गया है जबकि कृष्णमूर्ति प्रेम को एक रूप से परिभाषित करते हैं कहते है कि प्रेम तो वह वस्तु है जिसमें वासनाओं घृणाओं और किसी प्रकार को भेदभाव ना हो। व्यक्ति जब अपने किसी प्रिय के बारे में विचार करता है तो वह खूबसूरत स्मृतियों और संवेदनाओं का प्रतीक बन जाता है।

ईश्वर कृष्णमूर्तिजी का मानना था कि ईश्वर ने मनुष्य को नहीं बनाया, बल्कि ईश्वर का जन्मदाता तो स्वयं मानव है। कृष्णमूर्ति को ईश्वर एक विचार मात्र के रूप में स्वीकार करते हैं जो देश, काल, समय के साथ परिवर्तित होता है। अर्थात मनुष्य की अवधारणा के अनुसार ईश्वर का निर्माण होता है, इसलिए हर धर्म का ईश्वर अलग-अलग है।

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्धेश्य जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का मूल उद्धेश्य एक संतुलित मानव का विकास करना है, ऐसा मानव जो चेतनायुक्त हो, जो सद्भावना से परिपूर्ण हो, जो जीवन का अर्थ और उद्धेश्य जानता हो, जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संस्कृति, क्षेत्र आदि किसी भी आधार पर पूर्वाग्रहों एवं पूर्वधारणाओं से मुक्त हो, जो द्वेष, घृणा और हिंसा जैसी आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित कर सकने की सामर्थ्य रखता हो एवं स्वयं के लिए नवीन मूल्यों को तैयार कर सकता हो और जो एक नवीन संस्कृति एवं नवीन विश्व का निर्माण कर सकता है। अतः इस मूल उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए उन उद्धेश्यों को प्राप्त करना अनिवार्य है।

सृजनात्मकता का विकास इनके अनुसार सृजनात्मकता का अर्थ शरीर, मन और आत्मा तीनों की सृजनशीलता से है। इनके द्वारा बालकों पर किसी अन्य के विचारों को लादना नहीं चाहिए बल्कि उन्हें अपने निर्णय और कार्य करने से मुक्त अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। इसके लिए सुखद वातावरण आवश्यक है।

कृष्णमूर्ति मानते हैं कि शिक्षा का उद्धेश्य केवल विद्वानों, तकनीशियनों तथा व्यवसाय की खोज करने वाले लोगों को ही उत्पन्न करना नहीं है बल्कि ऐसे एकीकृत स्त्री और पुरूष उत्पन्न करना है जो भयभीत न हो क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के बीच में स्थायी शक्ति स्थापित हो सकती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण कृष्णमूर्ति का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए कोई ना कोई व्यवसाय अवश्य करना होता है इसलिए शिक्षा का उद्धेश्य किसी न किसी व्यवसाय हेतु निपुणता प्रदान करना होना चाहिए। वास्तविक शिक्षा का उद्धेश्य यह है कि जिससे वह अपने शरीर, मन और हृदय को जटिल, खंडित और कठोर न होने दे अपितु उनके बीच एक समरस एवं उचित सामंजस्य बना रहे।

संवेदनशीलता का विकास कृष्णमूर्ति कहते हैं कि शिक्षा का उद्धेश्य बालक को संवेदनशील बनाना है। इनके अनुसार बालकों में प्रकृति और मानवमात्र के प्रति प्रेम को स्थापित करना ही सही संवेदनशीलता है। इस प्रकार की संवदेनशीलता में घृणा, द्वेष, क्रोध और हिंसा को कोई स्थान नहीं होगा। बालक, भय, प्रतियोगिता और स्पर्धा से स्वतंत्र होंगे और इस प्रकार विश्व में चारों ओर मैत्री वातावरण स्थापित हो जायेगा।

वास्तविक चरित्र का निर्माण करना इन्होंने चरित्रवान का अर्थ असत्य को त्यागकर सत्य को अपनाने से लगाया है। वास्तव में सत्य की खोज करने और उस पर दृढ़ बने रहने से जो चरित्र निर्माण होता है, वह स्थायी और मूल्यवान होता है। ऐसे चरित्रवान व्यक्ति का जीवन स्वयं में ही एक आनन्द होता है। चरित्र निर्माण के लिए बड़ी मेघा और ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

वैज्ञानिक बुद्धि का विकास कृष्णमूर्ति के काल में विश्व में तकनीकी का विकास तीव्र गति से हो रहा था। विज्ञान के लिए नवीन, अनुसंधान हो रहे थे और लगभग सभी देशों में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा था। उनका मानना था कि इनका प्रयोग मानव कल्याण के लिए किया जाना चाहिए। वे कहते थे कि शिक्षा का उद्धेश्य बालक में वैज्ञानिक बुद्धि का विकास करना होना चाहिए। वैज्ञानिक बुद्धि से उनका आशय तत्वों के वास्तविक स्वरूप को जानना था।

शारीरिक विकास स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ मन का होना परम आवश्यक है। अतः बालक का शारीरिक विकास शिक्षा का मुख्य उद्धेश्य है। कृष्णमूर्ति ने कहा है कि जब बालक शारीरिक विकारों से स्वतंत्र होगा तभी वह प्रतिक्षण हमेशा नई वस्तु का अनुसंधान करने का प्रयत्न करेगा।

मानसिक विकास कृष्णमूर्ति ने शिक्षा का उद्धेश्य बालक को दिये जाने वाले विभिन्न ज्ञान के साथ उसके मन को परम्पराओं के बोझ से स्वतंत्र करना भी है जिससे वह आविष्कार करने, खोज करने और शोध करने में भी समर्थ हो सके।

सांस्कृतिक विकास कृष्णमूर्ति ने शिक्षा का उद्धेश्य ऐसे मानव का निर्माण करने से लगाया है जो सुसंस्कृत, सभ्य और शिष्ट हो। इनके अनुसार शिक्षा का उद्धेश्य मनुष्य में ऐसी शक्ति एवं अंतः चेतन की वृद्धि करना है जिससे वह पूर्वाग्रहों के विपरीत दृढ़तापूर्वक खड़ा हो सके और नवीन संस्कृति व नवीन मूल्यों का निर्माण कर सके।

आध्यात्मिक मूल्यों का विकास आध्यात्मिकता के विकास से इनका अर्थ आध्यात्मिक चेतन के विकास से है, नैतिक मूल्यों के विकास से है। शिक्षा का उद्धेश्य बालक में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना है कि वह अपने विचारों और कार्यो का हर संभव निरीक्षण करता रहे।

शोध की परिसीमाएं

प्राथमिक स्त्रोत जे. कृष्णमूर्ति की लिखित एवं अनुवादित पुस्तकें, प्राचीन अभिलेख, भाषण, लेख, जीवनी आदि।

द्वितीय स्त्रोत अन्य शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं द्वारा जे. कृष्णमूर्ति पर लिखित लेख आदि।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निष्कर्ष

1. जे. कृष्णमूर्ति की षिक्षा द्वारा समाज में फैली विकृतियों को दूर किया जा सकता है।
2. जे. कृष्णमूर्ति के उच्च विचारों का अनय शिक्षविदों के विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षा द्वारा बालकों में आत्मबोध एवं स्वतंत्र चिंतन की भावना से वर्तमान की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
4. जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों में समानतापर बल देक रदोनों की भूमिका महत्वपूर्ण बताकर उनके कार्यों को सम्यक व सुचारु बनाने का उचित प्रयास किया गया है।
5. जे. कृष्णमूर्ति के विचारों को जीवन से जोडकर शिक्षण कार्य पूर्ण किया जाता है। परिणामस्वरुप बालक रुचि लेकर शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करते है।
6. जे. कृष्णमूर्ति के स्व-अनुशासन के विचारों को शिक्षा में प्रयोग करने से शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक समस्याऐं समाप्त हो सकती है।

7. जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार सह-शिक्षा के माध्यम से समाज में अनैतिकता एवं अराजकता समाप्त हो सकती है।
8. जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा में ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जिससे जीविकोपार्जन के साधन एवं जीवन से संबंधित विषयवस्तु के द्वारा समाजिक समस्याओं का समाधान संभव हो सके।
9. जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार यौन शिक्षा देने से बालक अनैतिक कार्यों को समझ सकते है तथा उनकी तरफ कम आकर्षित होते है।
10. जे. कृष्णमूर्ति के मूल्यांकन सम्बन्धी विचारों को सम्पूर्ण रुप प्रयुक्त करके बालक को भय मुक्त शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कृष्णमूर्ति जे. 2005: शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट कोर्ट, वाराणसी।*
2. *कृष्णमूर्ति जे. 1998: शिक्षा संवाद कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट कोर्ट, वाराणसी।*
3. *कृष्णमूर्ति जे.: ज्ञात से मुक्ति, के. एफ. आई., राजघाट कोर्ट, वाराणसी।*
4. *कृष्णमूर्ति जे.शिक्षा एवं जीवन का महत्व, के.एफ. आई., राजघाट कोर्ट, वाराणसी।*
5. *कृष्णमूर्ति जे. 2000: जीवन की पुस्तक, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी।*
6. *कृष्णमूर्ति जे. 2000: सत्य एक पथहीन भूमि है कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया वाराणसी।*
7. *कृष्णमूर्ति जे. 2010: शिक्षा क्या है राजपाल एंड संस प्रकाशन दिल्ली।*
8. *कृष्णमूर्ति जे. 2006: ईश्वर क्या राजपाल एंड संस प्रकाशन दिल्ली।*